

an>

Title: Discussion regarding need to evolve an effective mechanism to deal with incidents of communal violence in the country raised by Shri Mallikarjun Kharge on 13th August, 2014 (Discussion not concluded).

HON. DEPUTY-SPEAKER: The House will take up now, discussion under Rule 193 regarding communal violence, which was initiated by Khargeji.

SHRI MALLIKARJUN KHARGE (GULBARGA): Sir, before Shri Mulayam Singh speak on this subject, मैंने अभी मिनिस्टर ऑफ स्टेट ऑफ पार्लियमेंटी अफेयर्स से यह सुना कि श्री राजनाथ जी की तबीयत ठीक नहीं है। वे यहां नहीं आ रहे हैं। आज रिप्लाई भी नहीं होगा। हम यह चाहते हैं कि उनकी सेहत अच्छी हो। I wish him all the best and speedy recovery. He should come hale and healthy to the House. We expect a reply from him. If he is not there, at least, the Prime Minister could give the reply. But anyway, I expect that he will come after speedy recovery and I wish him all the best.

PROF. SAUGATA ROY (DUM DUM): We also wish the Home Minister speedy recovery.

HON. DEPUTY SPEAKER: Let the discussion continue. The Minister will reply after some time.

श्री मुलायम सिंह यादव (आज़मगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे सांप्रदायिकता पर हो रही बहस में भाग लेने के लिए अनुमति दी है। इस पर विस्तार से चर्चा हो चुकी है। अपने-अपने तरीके से, अपनी-अपनी विचारधारा से इस पर विस्तार से चर्चा हुई है। हम इस संबंध में बहुत लंबा भाषण नहीं देना चाहते हैं, क्योंकि, सांप्रदायिकता के बारे में आपको पता है कि सबसे ज्यादा भुक्तभोगी हम रहे हैं। ... (व्यवधान) और आप भी जिम्मेदार हैं। ... (व्यवधान) हां, यह तो सर घोंटा कर पहुंची थी। ... (व्यवधान) तो भी पहचान लिया। ... (व्यवधान) ये तो मर्द के रूप में पहुंच गई थी। ... (व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय, वर्ष 1987 से ले कर लगातार सांप्रदायिकता के खिलाफ मुझे संघर्ष करना पड़ा है। ... (व्यवधान) बहुत-सी मुसीबतें हमारे सामने आई हैं। चुनाव के परिणाम भी इधर के उधर हो गए हैं। हमारी बहन जी, जो अभी बोल रही थीं, इन्होंने मुझे बहुत परेशान किया। ... (व्यवधान) इसलिए परेशान किया कि मुझे खबर मिल गई कि यह मर्द के भेष में मस्जिद गिराने के लिए अयोध्या जा रही हैं। ... (व्यवधान), लेकिन हम इनसे ज्यादा होशियार निकले। मैंने खबर दे दी तो आप गिरफ्तार हो गए। ... (व्यवधान) लेकिन, उन्होंने बहुत ज्यादा जोश पैदा किया, यह सही है। हमें परेशान किया। सांप्रदायिकता देश के लिए बहुत खतरनाक है। आज देश में सांप्रदायिकता जरा-जरा सी बात पर हो जाती है, लेकिन हमारे बहुत से माननीय नेता हैं, कभी दो वर्गों के लड़कों के बीच में भी विवाद खड़ा हो जाता है तो उसको दंगा कहते हैं। क्या यह दंगा था - मुज्जफरनगर का? मैंने तब भी बयान दिया और आज भी सदन के अंदर कह रहा हूँ कि वह दंगा नहीं था। ... (व्यवधान) वह दो वर्गों के बीच में विवाद था, झगड़ा था उसमें बहुत ज्यादा हत्याएं हुई हैं। वह दो वर्गों का झगड़ा था, उसमें कोई दूसरी जाति शामिल नहीं थी। ... (व्यवधान) बताइए कौन-सी जाति शामिल थी। ... (व्यवधान) एक जाति के अलावा कोई दूसरी जाति नहीं थी। केवल दो जातियाँ, दो वर्गों के बीच में वहां संघर्ष हुआ और जानें बहुत ज्यादा गईं। इसी तरह सहारनपुर में हुआ और नाम लिया गया। बताइए, क्या सहारनपुर का दंगा था? ... (व्यवधान) दो लोगों के बीच, एक कह रहे थे कि गुरुद्वारे की जमीन है और दूसरे कह रहे थे कि यह हमारी मस्जिद की जमीन है। इन दोनों के बीच विवाद हुआ, झगड़ा हुआ और मौत भी हो गई लेकिन यह घटना कितनी जल्दी शांत हुई। यह दो घंटे के अंदर शांत हो गई। इतना बड़ा विवाद हुआ, संघर्ष हुआ, बहुत हत्याएं हुईं, जुल्म हुआ, मुज्जफरनगर में सब कुछ हुआ, लेकिन मुझे गर्व है कि मैंने दो दिन के अंदर इस पर नियंत्रण किया। आज तक हिन्दुस्तान में इतना बड़ा विवाद दो दिन के अंदर कहीं भी नियंत्रित नहीं हुआ है। हमने उस पर नियंत्रण कर के दिखाया और बड़ी कोशिश की। हमारे यह बाबा, आदित्यनाथ जी झांसी में छिप गए। फिर, मुझे खबर मिल गई। ... (व्यवधान) झांसी से यह चले और जब परिक्रमा करना था, ... (व्यवधान)

योगी आदित्यनाथ (गोरखपुर) : हम छिपे नहीं थे। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : मस्जिद की परिक्रमा के नाम पर अयोध्या में जा कर दंगा करना, ... (व्यवधान) तो कौन, हमारा असली प्रिय है। ... (व्यवधान) समझ लेना चाहिए, हमने तुम्हारे बारे में कहा था। ... (व्यवधान)

योगी आदित्यनाथ : न्यायालय के आदेश के बाद भी। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, आपने इन्हें बोलने की इजाजत दी है या हमें दी है। ... (व्यवधान) आप इन्हें बिठाइए। ... (व्यवधान) मैंने नाम नहीं लिया है, आदित्यनाथ नहीं कहा है। मैंने तो कहा ये है। हमने बहन का नाम बहन जरूर कहा। ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Nothing will go on record.

(Interruptions) â€/*

HON. DEPUTY SPEAKER: Do not shout. You are not allowed to shout.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : ये परेशान क्यों हैं? ... (व्यवधान) आपको समझना चाहिए कि दंगा कौन कराता है। आप समझ लीजिए। ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Do not make such shouts please. This is Parliament.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : अब आप दंगा नहीं करवा पाएंगे। ... (व्यवधान) हमारी सरकार के रहते दंगा कराएंगे तो तुरंत नियंत्रित करेंगे। ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Mulayam Singh Yadav, just stop for a minute.

I may inform all the Members that we are discussing a serious matter. He is a senior Member and also a former Chief Minister. When he is saying something, please listen to him. If at all you have any objection you raise it afterwards and not in the middle. Then, there will not be any discussion at all. Therefore, please cooperate with the Chair. Do not shout like this. You go on shouting. It is not fair on your part. Please do not shout. Let him speak....(Interruptions)

He is a senior Member. Please listen to him. If you have any objection, you can speak afterwards but not in the middle. Let him complete.

श्री मुलायम सिंह यादव : यह नई बात नहीं है। जब माननीय अटल जी प्रधान मंत्री थे और हम बोलने के लिए खड़े हुए तो ये सब लोग शोर मचाने लगे। अटल जी कहने लगे, मुलायम सिंह जी जब बोलेंगे तो ये थोड़ा-बहुत शोर तो करेंगे।...(व्यवधान) ये हमसे परेशान हैं।...(व्यवधान) देखिए, परेशान हैं।...(व्यवधान) ये कामयाब हो ही नहीं सकते।...(व्यवधान) हमारा हिन्दुस्तान मानवतावादी है। सांप्रदायिक शक्तियों को अब कोई बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं इसे दोहराना नहीं चाहता कि ये कैसे चुनाव जीतकर आ गए।...(व्यवधान) हम आज कह रहे हैं कि सावधान रहिए। बहुमत मिल गया है तो आगे के बहुमत के लिए सावधान हो जाइए, नहीं तो आपको मुश्किल होगी।...(व्यवधान) हम कह रहे हैं कि इसके दो कारण हैं - एक, आपसी अविश्वास काफी पैदा हो चुका है। अगर सांप्रदायिकता को रोकना है तो उसे हम सबको मिलकर ठीक करना पड़ेगा। कोई एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करता। हम भुक्तभोगी हैं और आप में से भी बहुत से सदस्य हैं। हम इसके लिए कैसे वातावरण बनाएं, इस बारे में चाहे नेता बैठें, सदन में बहस हो ही रही है, इसमें हम अपनी बात रख सकते हैं, दोबारा कभी इस पर बहस कर सकते हैं। इसे खत्म करना पड़ेगा। देश को मजबूत करना पड़ेगा। दोनों वर्गों ने मिलकर देश को आजाद करवाया है, देश का विकास किया है। जहां तक माइनोरिटी का सवाल है, अगर किसी ने देश का 80 फीसदी विकास किया है तो केवल किसानों और मुसलमानों ने किया है। आप अध्ययन कर लीजिए।...(व्यवधान) दस्तकारी का काम किसके हाथ में है। आज भी 80 फीसदी दस्तकारी मुसलमानों के हाथों में है। आप उनका सिला हुआ कपड़ा क्यों पहनते हैं, ...(व्यवधान) जेवर कौन बढ़िया बनाता है, उनसे नफरत करते हैं और शादी में बहू-बेटियों को उन्हीं के हाथों से बनायी हुई साड़ी और जेवर पहनाते हैं। ...(व्यवधान) उनको बनारसी साड़ी पहनाते हैं। बनारसी साड़ी कौन बनाता है? ...(व्यवधान) आप बताइये कि उसे कौन बनाता है? ...(व्यवधान) कारपेट कौन बनाता है? ...(व्यवधान) आप उसे बिछाते हैं। ...(व्यवधान) इसलिए हम आपसे कहना चाहते हैं कि जो आपसी अविश्वास है, वह खत्म होना चाहिए। ...(व्यवधान) यहां से यह संदेश जाना चाहिए। ...(व्यवधान) हमारे और आपके प्रति जो अविश्वास बढ़ रहा है, उसे खत्म करना चाहिए और जो हो चुका है, उसे ठीक करना है। इससे सांप्रदायिकता खत्म हो जायेगी। ...(व्यवधान)

आपको हमसे क्या परेशानी है? अब बाबा को तो परेशानी हो सकती है, लेकिन आपको क्या परेशानी है? ...(व्यवधान) इसलिए हम आपसे बार-बार दोहराना चाहते हैं कि अविश्वास खत्म होना चाहिए। हम खुद भुक्त-भोगी हैं, आप भी हैं, सब हैं। ...(व्यवधान) आपसी अविश्वास कैसे खत्म हो, इस पर अगर आपको अलग से बहस करनी है, तो वह करनी चाहिए।

दूसरी बात यह है कि जो माइनोरिटी के लोग हैं, उनके बारे में भी हमें अपनी राय थोड़ी बदलनी होगी। उन्हें भी हमें कुछ सुविधा देनी होगी। आज उन्हें कोई सुविधा नहीं दी जा रही। बहुत से लोग ऐसे हैं, जिन्हें नौकरियों के साथ अन्य सुविधाएं भी नहीं मिल पा रहीं। हम जब सरकार में नहीं थे, तब उत्तर प्रदेश में मुसलमानों की नौकरियों में एक फीसदी से ज्यादा भर्ती नहीं थी। मैं आज खुलकर बोल रहा हूं। ये क्या कहते थे -- इनका सीना चौड़ा नहीं है। जब हम मुख्यमंत्री बने, तो उनकी संख्या 11 परसेंट हो गयी। जैसे ही हम सरकार में आये, उनका सीना चौड़ा हो गया और जब तक ये रहे, तब तक सीना पतला था। ...(व्यवधान) जब आपके लोग थे, तब सीना पतला था। ...(व्यवधान) आपके यहां भी थोड़ी गलती हुई है। ...(व्यवधान) अब आप उसे सुधार रहे हैं। ...(व्यवधान) आप जैसे लोग सुधार सकते हैं। ...(व्यवधान) आप लोग सुनिए। ...(व्यवधान) आप सबसे भी गलती हुई है। उन्हें सुविधाएं नहीं मिली हैं। ...(व्यवधान) असली बात यह है कि सांप्रदायिकता क्या है? सांप्रदायिकता क्या है, इसे आप खुलकर नहीं बोलते, मैं खुलकर बोल रहा हूं। आपको इससे परेशानी होती है। ...(व्यवधान)

श्री रमेश बिधुड़ी (दक्षिण दिल्ली) : उपाध्यक्ष महोदय, इतने सीनियर लीडर हो कर यह जाति की राजनीति बता रहे हैं। ...(व्यवधान) हम मुसलमान विरोधी नहीं हैं। ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : आप पहली बार जीत कर आये हैं, ...(व्यवधान) अगर दोबारा जीतेंगे तब पता चलेगा। ...(व्यवधान)

PROF. SAUGATA ROY : Sir, only one Member from that side is disturbing him again and again. â€ (Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: Hon. Member, you are making too much disturbance in the House.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : पहली बार जीतकर आये हैं। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: The Member has a right to speak. You cannot disturb him like this.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : जब आप दोबारा जीत कर आयेंगे तब पता चल जायेगा। ...(व्यवधान) जब आप जनता की कसौटी पर खरे उतरेंगे, तब पता चलेगा? ...(व्यवधान)

श्री रमेश बिधुड़ी : उपाध्यक्ष महोदय, इतने सीनियर लीडर क्या ऐसी भाषा बोलेंगे कि मुसलमान, मुसलमान ...(व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : क्या बात है? ...(व्यवधान) क्या यह हमसे बहस करने लायक है? ...(व्यवधान) मैंने इनके खिलाफ क्या बोला है? ...(व्यवधान) आप उनकी बनायी हुई साड़ी अपनी बहू-बेटियों को मत पहनाना। ...(व्यवधान) आप बाल मत कटवाना। ...(व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Mulayam, you please continue your speech.

...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please do not shout. You are from the ruling side, and you have to keep quiet.

...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: If you want to speak, then you can speak afterwards and I will allow you to speak.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : वे उन्हीं से बाल कटवायेंगे ... (व्यवधान) उन्हीं से कपड़े सिलवायेंगे, जेवर भी उन्हीं से बनवायेंगे ... (व्यवधान) साड़ी भी उन्हीं की बनवायी हुई पहनेंगे। ... (व्यवधान) कारपेट भी उन्हीं की बनी हुई बिछायेंगे और उनसे नफरत करेंगे, यहां शोर मचायेंगे। ... (व्यवधान) आप शोर क्यों मचाते हैं? ... (व्यवधान) हम जानते थे कि आप शोर मचायेंगे। ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Shri Mulayam, please address the Chair.

...(Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, हम चाहते हैं ... (व्यवधान) हम खराब भाषा नहीं बोल रहे। ... (व्यवधान) हम आप जैसे थोड़े ही हैं। ... (व्यवधान) हम आपसे कहना चाहते हैं कि आज हम सब इस पर लंबी बहस कर रहे हैं। हमें केवल यही कहना है कि कैसे एक दूसरे में विश्वास पैदा होगा और कैसे देश के विकास में दोनों जुटेंगे? ... (व्यवधान) जब पाकिस्तान से युद्ध हुआ, तो उसमें सबसे ज्यादा बलिदान किसने दिया? ... (व्यवधान) अब्दुल हमीद ने अपनी जान देकर देश को बचा लिया। ... (व्यवधान) अगर वह कूदकर जान नहीं देता तो हमारी फौज का बहुत बड़ा नुकसान हो जाता। ... (व्यवधान) यह मामूली बात नहीं थी। ... (व्यवधान) वह विस्फोट होता तो उससे हमारी बहुत सारी फौज मारी जाती। ... (व्यवधान) अब्दुल हमीद बम लेकर उसी में कूद पड़ा। ... (व्यवधान) उन्होंने पाकिस्तान के बम को खराब किया। पाकिस्तान की लड़ाई में भी उनकी शानदार भूमिका रही है, तो परेशानी किस बात की है? ... (व्यवधान) हम कह रहे हैं कि वह सही है और आज भी वे लोग ही विकास कर रहे हैं। ... (व्यवधान) उनके बुने हुए कपड़े मत पहनिए, उनसे बाल मत कटवाइए, जेवर मत बनवाइए। आप सारा काम उनसे करवाते हैं और उनसे नफरत करते हैं। सच बात तो कहनी पड़ेगी। देश के सामने हम सब मिलकर चलें, मेरी यह राय है। ... (व्यवधान) आपने बड़ी कोशिश कर ली, ठीक है कि आप लोक सभा के चुनाव में जीत गये, लेकिन विधान सभा के चुनाव में क्या हुआ? ... (व्यवधान) विधान सभा के चुनाव में आपने क्या कर लिया? लोक सभा के चुनाव में भी आपको दिक्कत हो जाती, ... (व्यवधान) वह तो गलती इनकी हुई, मैंने बता दिया, ... (व्यवधान) दस साल इन्होंने लगातार राज किया, पर जनता पर प्रभाव नहीं जमा पाये और उसी का लाभ आप उठा ले गये। हमारे साथ ऐसा इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि, पूरे देश में हमारी पार्टी नहीं थी, वरना आप नहीं आ पाते। ... (व्यवधान) हमको वोट का एक प्रतिशत मिला है, यह ध्यान रखें, सावधान हो जाएं। एक मैगज़ीन ने लिखा है कि बी.जे.पी. सावधान हो जाए। ... (व्यवधान) उनके आंकड़े तो आपने दिये थे ... (व्यवधान) कि आपको कितने प्रतिशत वोट मिले, लेकिन सरकार बन गयी, अच्छी बात है, आपका स्वागत है, आपको बधाई हो, लेकिन सच्चाई तो सुन लीजिए। ... (व्यवधान) सच्चाई सुनने में क्या दिक्कत है। हम सारी बातें क्यों सुनते रहें। हमने तो बीच में नहीं बोला। बहुत-से आपत्तिजनक भाषण दिये जाते हैं और दिये गये हैं, पर मैंने कभी बीच में नहीं टोका। लेकिन बाबा न जाने क्यों टोक देते हैं? ... (व्यवधान) छोटा महंत ... (व्यवधान) ठीक है, महंत। हम तो बाबा ही कहते रहे, लेकिन आज महंत कहलवा लें। ... (व्यवधान) पर महंत बन तो जाइए। कितनी बड़ी जिम्मेदारी होती है, महंत की? उसी तरह से रहिए ... (व्यवधान) इन्होंने मुझे संदेश दिया ... (व्यवधान) अब वे पर्सनल बातें हम नहीं कहेंगे। ... (व्यवधान)

योगी आदित्यनाथ : ये एक सीनियर सदस्य हैं और आपत्तिजनक बातें कर रहे हैं। ... (व्यवधान)

इनको अपने सम्मान का ध्यान रखना चाहिए, नहीं तो इनको अपमानित होना पड़ेगा। ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक ही निवेदन करना चाहता हूँ।

HON. DEPUTY-SPEAKER: If there are any objections, they will be taken care of.

...(Interruptions)

PROF. SAUGATA ROY : What is he objecting to? What did he say? ... (Interruptions) ऐसा क्या बोला गया, जिस पर इनको आपत्ति है? When the Opposition criticizes them, they would not let anybody speak. Is that the fate of the House? ... (Interruptions)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Yesterday, as you know, when he spoke, we all kept quiet. He used terms like 'Pakistani Agenda'; he accused and abused us, but we kept quiet. We never interfered in his speech. Why is he interfering when Shri Mulayam Singh Yadav is speaking? Let them speak afterwards. Let them take their time and let them counter it in their arguments, but why are they interrupting him now?

PROF. SAUGATA ROY : They are not allowing anybody to speak. ... (Interruptions)

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, आप कार्यवाही देख लें, मैंने एक भी आपत्तिजनक शब्द नहीं बोला है। ... (व्यवधान) मैंने महन्त साहब कह दिया, बाबा जी कह दिया, तो भी परेशानी है। अब क्या कहें? असली बात कह दें, तो फिर आप जानते हैं। ... (व्यवधान) * मुरादाबाद में दंगा कराने गए थे, किठौर में गए थे। ... (व्यवधान) वहां पकड़ा पुलिस ने, इनकी पार्टी के दो विधायक थे। ... (व्यवधान) उसने कहा कि पूरे प्रदेश में दंगा कराने वाली यह पार्टी है। एक अफसर ने यह कह दिया, खुलेआम देश के सामने बयान दिया है। ... (व्यवधान) ये सांप्रदायिक सद्भाव तोड़ रहे हैं या नहीं? ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please conclude Mulayam Ji.

श्री मुलायम सिंह यादव : मैंने आपके खिलाफ क्या कह दिया? ... (व्यवधान) आपकी आरती उतारें? ... (व्यवधान) इनकी आरती उतारें? ... (व्यवधान) ढोल बजाकर आरती उतारेंगे। ... (व्यवधान) तुम्हारी आरती उतारें। ... (व्यवधान)

साध्वी सावित्री बाई फूले (बहराइच) : उत्तर प्रदेश में इतनी घटनाएं हो रही हैं खुले आम, आप उसके बारे में क्यों नहीं बोलते? ... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : वह बहन क्या बोल रही है? ... (व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : अरे, देखिए। कहां से आ गई ये सब। ... (व्यवधान)

श्री अनुराग सिंह ठाकुर (हमीरपुर) : दादा, आप यह कैसे बोल सकते हैं? ... (व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : आप मुझे डराइए मत। ... (व्यवधान)

HON. DEPUTY SPEAKER: Mr. Saugata Roy, what is this? You are a senior Member.

...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: I am standing on my feet.

...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: Yesterday also, I said that if there was any objectionable thing, it would be removed. If Mulayam Singh ji speaks any objectionable thing, that will be removed. Therefore, please cooperate. Let him first finish his speech.

...(Interruptions)

HON. DEPUTY SPEAKER: Please conclude Mulayam Ji.

श्री मुलायम सिंह यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मेरी राय यह है कि मैं इस सदन को पहले ही कह चुका हूँ कि यह सदन सद्भाव पैदा करे, तो आपत्ति क्यों हो।... (व्यवधान) आप इनको कहिए। मैंने एक भी शब्द खराब नहीं बोला है।... (व्यवधान) मैं नीतियों की बात कह रहा हूँ। यह सही है कि इनकी नीतियों की वजह से नुकसान हुआ है और देश में सांप्रदायिक सद्भाव टूटा है।... (व्यवधान) कई उदाहरण ऐसे हैं, अगर वर्ष 1987 से अब तक के उदाहरण देना शुरू कर दूँ, एक-एक बात आपको बता दूँ।... (व्यवधान) अब क्या मतलब था, कहते हैं परिक्रमा करेंगे।... (व्यवधान) परिक्रमा एक बार होती है नवरात्रि में और उसमें सब लोग शामिल होते हैं।... (व्यवधान) उस परिक्रमा में सारे के सारे इकट्ठे हो जाते हैं।... (व्यवधान) अब ये परिक्रमा करेंगे और सारे हिन्दुस्तान के साधुओं को बुला लेंगे।... (व्यवधान) मिले हमको, हमने फिर से संभाला।... (व्यवधान) दंगा-फ़साद कराने में लगे हैं। अभी-अभी का मामला है, किठौर का मामला है, एक अधिकारी ने खुलेआम बयान दिया है।... (व्यवधान) एक अधिकारी ने खुलेआम बयान दिया है।... (व्यवधान) * ऐसा बयान दिया है। एसएसपी, मुरादाबाद ने ऐसा बयान दिया है और सच्चाई है, तो हमें और आपको ठीक होना चाहिए।... (व्यवधान) जनप्रतिनिधि से क्या उम्मीद की जाती है?... (व्यवधान) अब मैंने ऐसा कौन सा शब्द बोल दिया है। मैंने महन्त कह दिया, बाबा नहीं तो महन्त, इसमें क्या बुरा है?... (व्यवधान) ये महन्त हैं, मैं मानता हूँ।... (व्यवधान) जैसे वे महन्त थे, वैसे तो बनिए।... (व्यवधान) महन्त अवैद्यनाथ जैसे थे, उनके आचरण पर आपको चलना चाहिए।... (व्यवधान) जब यह विवाद खड़ा हुआ अयोध्या में, महन्त अवैद्यनाथ ने बहुत अच्छी राय दी।... (व्यवधान) उन्होंने रोका। मैं इनके मठ में मिलने गया, उन्होंने साफ तौर पर कहा कि मुलायम सिंह यादव ठीक कर रहे हैं।... (व्यवधान)

योगी आदित्यनाथ : हम कभी उसका समर्थन नहीं कर सकते। आप सही नहीं कह रहे हैं।... (व्यवधान)

श्री मुलायम सिंह यादव : ये हाउस में ऐसा कर रहे हैं और बाहर भी ऐसा कर रहे हैं।... (व्यवधान)

मैं तो तारीफ कर रहा हूँ। आपको तारीफ में भी परेशानी हो रही है।... (व्यवधान)

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL (BIKANER): Sir, I am on a point of order. Rule 353 is about procedure regarding allegation against any person. It says:

"No allegation of a defamatory or incriminatory nature shall be made by a member against any person unless the member has given adequate advance notice to the Speaker and also to the Minister concerned so that the Minister may be able to make an investigation into the matter for the purpose of a reply."

He has leveled an allegations against Shri Yogi Adityanath. It must be removed from the proceedings.

HON. DEPUTY SPEAKER: I have already said that if there is anything objectionable, it would be removed from the record.

श्री मुलायम सिंह यादव: उपाध्यक्ष महोदय, सांप्रदायिक सद्भाव कौन खराब करता है, कौन उत्तरदाई है, मैंने किसी के बारे में कोई गलत बात नहीं कही। मैं तो महंत अवैद्यनाथ जी की तारीफ की कि मैं उनका बहुत आदर करता हूँ। आप उनके उत्तराधिकारी बन गए हैं, मैंने यह कहा कि जैसा सम्मान उन्होंने पाया है, आप भी पाएं। इसमें भी लगता है आपको परेशानी हो रही है। फिर मैं और क्या कहूँ... (व्यवधान) हम चाहते हैं कि जो दंगे हुए हैं, उनकी जांच के लिए सभी दलों की समिति बनाई जाए, जो यह देखे कि किसका इनमें हाथ है।

सभापति जी, देश में आज हालात अच्छे नहीं हैं। जगह-जगह कहीं धर्म के नाम पर, कहीं जाति के नाम पर विवाद खड़े हो जाते हैं। जहां तक उत्तर प्रदेश का सवाल है, उत्तर प्रदेश का नाम इस चर्चा में आया है, मैं उस बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। आप आज आंकड़े मंगा लीजिए, आपके पास हैं, उनसे पता चलता है कि सबसे बढ़िया कानून व्यवस्था यदि कहीं है देश में तो उसमें उत्तर प्रदेश का नम्बर पहला है। ये आंकड़े हमारे नहीं हैं, ये भारत सरकार के गृह मंत्रालय के हैं। देश में अगर कहीं सबसे ज्यादा रेप की घटनाएं हुई हैं तो मध्य प्रदेश में हुई हैं, दूसरे नम्बर पर राजस्थान है। उत्तर प्रदेश में जनसंख्या के अनुपात में सबसे कम रेप की घटनाएं हुई हैं, करीब दो प्रतिशत और मध्य प्रदेश में 9.8 प्रतिशत तथा राजस्थान में सात प्रतिशत, और आप बात करते हैं उत्तर प्रदेश में सांप्रदायिक दंगों की या कानून व्यवस्था की बिगड़ती हालत की। सबसे कहीं रेप की घटनाएं उत्तर प्रदेश में हुई हैं।... (व्यवधान) ये भारत सरकार के आंकड़े हैं, हमारे नहीं हैं। ये आंकड़े आपकी सरकार के हैं, आपके गृह मंत्री जी और गृह मंत्रालय के आंकड़े हैं।

हम बड़ी विनम्रता से कहना चाहते हैं कि सांप्रदायिक सद्भाव कैसे बनाए रखा जाए, इस पर यहां बहस हो रही है। अगर इस बहस का कोई सार्थक हल नहीं निकलेगा, तो फिर इसका फायदा क्या, क्योंकि इतना खर्च भी हो रहा है। इसलिए हम सबको किसी नतीजे पर पहुंचना चाहिए, पूरे सदन की एक राय हो कि कैसे सद्भाव बनाए रखा जा सकता है। इस समय लोगों में एक अविश्वास पैदा हो गया है, उसे कैसे खत्म किया जाए, इसका हल निकालना चाहिए। तब ही देश का विकास हो सकता है, जब सारे मिल जाएं, एक हो जाएं।... (व्यवधान) यह सही है कि हिन्दुस्तान का विकास अगर किसी ने किया है तो वह किसान और मुसलमान ने किया है।... (व्यवधान) इसमें क्या परेशानी है, मैं सही कह रहा हूँ और यह भी कहना चाहता हूँ कि किसान और मुसलमान दोनों की इस देश में उपेक्षा हुई है। इसलिए हमें इन चीजों पर विचार करके इस बहस को सार्थक बनाते हुए सभी पक्षों में सद्भावना पैदा करने की बात करनी चाहिए।

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER (PONNANI): Sir, thank you very much for giving me this opportunity. We are discussing a very important topic pertaining to the honour and existence of this biggest democratic country of ours.

We had incidents of communal violence earlier also. The Nellie Massacre of 1983, the Gujarat riots of 2002, and the latest clashes in Saharanpur of 2014, if we get into the root cause of all this, we will come to know that the British left India after sowing the poisonous seeds of communal virus in this country. They had the ulterior motive of divide and rule.

Fortunately this country had great leaders like Mahatma Gandhi, Pandit Jawaharlal Nehru and many others. Gandhiji once wrote, "I do not expect India of my dreams to develop one religion that is to be wholly Hindu or wholly Christian or wholly Musalman, but I want it to be wholly tolerant, with its religions working side by side with one another".

If we examine the contemporary Indian situation, I would like to say that the policies of this government are not at all helpful in controlling communal violence. I would like to say that they are stimulating communal tension. They have to think honestly to find out a mechanism to control this kind of communal violence.

14.52 hrs

(Shri Anandrao Adsul *in the Chair*)

Sir, my first and foremost suggestion is with regard to the educational sector. We must nurture the values of communal harmony in our classroom itself. At the same time, if we inject the communal poison in the veins of budding generations, where will this country go? We have to think about this.

I wish to say with profound regret that this government is planning to communalise the very basis of the nation, including the foundation of education. I do not want to provoke anybody. With all humbleness I would like to quote a few questions and answers taught in Gujarat's schools now. A 21-member Committee has been constituted under Bharatiya Shiksha Nidhi Ayog to suggest educational reforms according to the political ideology of BJP. Educational institutions such as ICHR, NCERT, and UGC are all in the grip of political masters.

If you make an examination of the textbooks now taught to school students in Gujarat you will find the following:

Question: How many devotees of Rama laid down their lives to liberate Ram Temple from 1528 to 1914?

Reply: 3,50,000.

Question: How many times the foreigners invaded Shri Ram Janmabhoomi?

Reply: Seventy-seven times.

Question: What was the number of struggles for the liberation of Ram Janmabhumi, which was launched on October 30, 1990?

Reply: Seventy-eight struggles.

Question: Which Muslim plunderer invaded the temples in Ayodhya in 1033?

Reply: Mahmud Ghaznavi's nephew Salar Masud.

Question: Which Mughal invader destroyed the Ram Janmabhoomi in 1528?

Reply: Babur.

Apart from these, there are some wonderful findings which go as follows:

- Qutb Minar was constructed by Samudragupta and its original name was Vishnu Sthambha (page 73, Gaurav Gatha).
- The Babri Mosque was constructed after destroying a temple, which in turn stood on the exact spot where Rama was born. (High School Itihaas Bhaag-2, page 146.)
- Qur'an was the basis of the state policy of Aurangzeb, and whatever policy was adopted for running the government was basically for promoting Islam.

Sir, if these are the lessons we are teaching in the classrooms, where are we leading this country to? We have to think about this.

Sir, recently a Supreme Court Judge made a statement. He said, "Had he been a dictator of India, he would have introduced *Gita* and *Mahabharata* in Class I. You teach *Gita* and *Mahabharata*, *Quran* or *Bible*, but teach them in the classrooms of religious institutions. Why do you want to bring it in the schools?" All I am saying is, if you poison the minds of the budding generation, you criminalise the country. I wish to warn the Government. I would not say much on this because when Shri Mulayam Singh Yadav spoke, he spoke a lot on that.

Somebody was asking why we should discuss this point in Parliament. Whether it is UPA or NDA, we may have some political bases but we have to keep in mind that we should not glorify communal incidents. This Government, with due respect, I would say came power by glorifying the Gujarat riots. ...(*Interruptions*)

HON. CHAIRPERSON : You please conclude now.

SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER : That was the stepping stone; that was how this Government came power. What I am saying is you should not mix your political liking to the secular country. ...(Interruptions)

Sir, I conclude now.

श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा (आनंदपुर साहिब) : सभापति जी, सांप्रदायिक घटनाओं को प्रभावशाली तंत्र के साथ बंद करने की जो चर्चा छिड़ी है, मैं अपनी पार्टी शिरोमणी अकाली दल की तरफ से उस पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूँ।

मैं समझता हूँ कि जो विषय है, उसके पीछे क्या सोच है, वही सांप्रदायिक घटनाओं का कारण बन रहा है। आज कम्यूनलिज्म और सैक्यूलरिज्म के जो अर्थ निकाले जा रहे हैं, वे गलत हैं। जो धर्म को मानते हैं, उन्हें कम्यूनल कहा जाता है और जो धर्म से नफरत करते हैं, उन्हें सैक्यूलर कहा जाता है। यह देश वह देश है, जिसमें ऋषि, मुनि, पीर, पैगम्बरों ने जन्म लिया है और उपदेश दिया है। इस देश की धरती के लोगों को हमारे गुरुओं ने कहा - "मानस की जात, सबके एक ही पहचान।" हमारे गुरुओं ने कहा - "सूरा सो पहचानिए, जो लरे दीन के हेत।" हमारे गुरुओं ने उपदेश दिया - "अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बंदे, एक नूर ते सब जग उपजेया, कौन भले, कौन मंदे।" हमारे देश में अंग्रेजों की सोच से राजसी फायदा लेने के लिए लोगों को धर्म के नाम पर बांट दिया। मैं कहता हूँ कि जो धर्म से नफरत करते हैं, असली रूप में वे कम्यूनल हैं। जो गुरुद्वारे में फौज ले जाकर टैंकों से लोगों को गिराते हैं, वे कम्यूनल हैं। जो किसी धर्म के बच्चों को गले में टायर डाल कर जलाते हैं, वे कम्यूनल हैं। जो धर्म को मानने वाले हैं, उन्हें कम्यूनल कैसे कह सकते हैं। यहां इमरजेंसी के समय में विदेशी ताकतों के प्रभाव में आ कर हमारे संविधान की प्रस्तावना में भी अमेंडमेंट कर दिया गया। हमारी मानसिकता में से धर्म खत्म कर दिया, हमारे ऊपर कानून लागू कर दिया कि आप धर्म को नहीं मानेंगे। जो धर्म को मानेगा, उसे डिस्क्वालीफाई कर दिया जाएगा। यहां जितने लोग बैठे हैं, इनमें से कौन है जो धर्म को नहीं मानता है, फिर अमेंडमेंट क्यों किया गया? कुछ लोगों ने बहुत होशियारी से अंग्रेजों की सोच ले कर इस देश को धर्म के नाम पर बांट कर लोगों को लहुलुहान कराकर लोगों की लाशों पर कुर्सियां रखकर राज किया। आज हमारे दिल में जो आग जल रही है, उसे बुझाने के लिए मैं निवेदन करूंगा कि आप अपनी सोच में बदलाव लाएं और हर धर्म का सम्मान करें। यह वह देश है, जहां गुरु तेग बहादुर साहब जनेऊ नहीं पहनते थे, मगर कश्मीर से चलकर पंडित आनंदपुर साहब आए, सौभाग्य से मेरे संसदीय क्षेत्र का नाम भी आनंदपुर साहब है, जहां से गुरु तेग बहादुर साहब आए। उन्होंने यहां बलिदान दिया। उनका यहां साथ के गुरुद्वारे में संस्कार हुआ। उन्होंने सभी धर्मों का बराबर सम्मान करने के लिए अपना बलिदान दिया।

15.00 hrs

मुझे इस बात का खेद है कि इस देश में राज करने वाले लोगों ने धर्म को मिटाने के लिए, धर्म की शक्ति को मिटाने के लिए, धर्मियों में नफरत पैदा करने के लिए तमाशा बना दिया, अपनी राजसी सत्ता के लिए तमाशा बनाया। मैं मुलायम जी का बहुत सत्कार करता हूँ। ये ऐसे व्यक्ति हैं जब 1984 में कत्लेआम हो रहा था, इन्होंने आवाज उठाई थी और इनको नुकसान भी हुआ था। लेकिन आज मुझे बहुत खेद हुआ जब इन्होंने देश के विकास के लिए केवल किसानों और मुसलमानों की बात कही। मैं कहना चाहता हूँ कि इसमें सिखों का भी हिस्सा है, हिंदुओं का भी हिस्सा है, इसाई भाई दफ्तर में काम करते हैं, उनका भी हिस्सा है। यही तो सोच है। वोट लेने के लिए कहीं वोट बैंक ज्यादा होता है तो कहीं कम होता है तो वहां उस तरह का स्लोगन लगता है, हो सकता है उत्तर प्रदेश में कम वोट हों। मैं हाउस को याद दिलाना चाहता हूँ कि सांप्रदायिक घटनाएं कब शुरू हुईं। 1971 में सबसे ज्यादा सेक लगा। 1971 में जनरल इलैक्शन हुए, पंजाब से इधर के इलाकों में और तरह के पोस्टर लगे, जब पंजाब से जम्मू कश्मीर के इलाकों में और तरह पोस्टर लगे थे। उस समय की लगाई आग जम्मू कश्मीर में अब भी जल रही है। जब देश के नेता इस तरह की सोच पर चलेंगे तो कैसे देश बचेगा?

इस देश ने 1984 में तमाशा देखा जब लोगों का कत्लेआम हो रहा था। उस समय देश के एक नेता ने कहा था कि जब बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती कांपती है।...(व्यवधान) आज यहां चर्चा शुरू की गई है। आइडेंटिफाई किया गया, दोष लगाए गए, कितने कमीशन बैठे, कत्लेआम के दोषी लोगों को आइडेंटिफाई किया गया, उनको मंत्री बनाया गया, एमएलए और एमपी बनाया। देश में कैसे घटनाएं रुक सकती हैं? जब आप प्रभावशाली तंत्र की बात कहते हैं तब लगता है कि क्रश करने की बात कह रहे हैं। जब किसी की भावना को क्रश करेंगे तो रिएक्ट होगा।...(व्यवधान) इन्होंने क्रश करके 1984 में फौज और टैंक चढ़ाकर देखा। फिर देश में क्या हुआ? ...(व्यवधान) मैं कहना चाहता हूँ कि अगर विल पावर होती है तो सब कुछ रुक जाता है। जब 1984 में कत्लेआम हुआ था, माननीय वाजपेयी जी ने इसके विरोध में आवाज उठाई थी। उनकी गिनती कम हो गई थी लेकिन आज देश के लोग इसे सबसे बड़ी पार्टी के रूप में चुनकर हाउस में ले आए।...(व्यवधान) माननीय नरेंद्र मोदी जी ने 'सबका विकास, सबका साथ' की बात कही, गुरु नानक के संदेश 'सरबत दा भला' पर चलने की बात कही। देश आगे बढ़ सकता है अगर हाउस सब धर्मों का सम्मान करे और सांप्रदायिक सिस्टम को क्रश करने की विल पावर रहे।

श्री मोहम्मद असराफुल हक (किशनगंज) : इज्जत मआब सदरे इजलास, आपने मुझे नियम 193 के तहत फिरकावाराना तशद्दुद पर जारी बहस पर बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ। इज्जत मआब कल से जारी बहस में फिरकावाराना तशद्दुद की रोकथाम के लिए एक मेकेनिज्म बनाने की बात हो रही है। मैं चाहता हूँ कि मेरी पांच तजवीजों को इस मेकेनिज्म का हिस्सा बनाया जाए। मैं पांच तजवीजें पेश करके अपनी बात खत्म करूंगा। मैं आपसे गुजारिश करता हूँ, यह छोटी-छोटी तजवीजें हैं, मुझे पांच तजवीजें पेश करने का मौका दें। पहली तजवीज यह है कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदुस्तानी समाज मुख्तलिफ धार्मिक, इकाइयों, जातों और बिरादरियों पर आधारित है। हम एक दूसरे से रंग, नस्ल, मजहब और तहज़ीब में अलग-अलग होने के बावजूद एक हैं। हम सदियों से एक दूसरे के साथ शीर और शक्कर की रहते चले आ रहे हैं। यही हमारी शान है, यही हमारी धरोहर है, यही हमारा इतिहास है। यहां की गंगा-जमुनी तहज़ीब और हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, आपस में हैं भाई-भाई के बिरादाराना ज़रूबात हिंदुस्तान के जम्हूरी ताज के दो चमकदार नगीने हैं। यहां कोई गंगा जल से स्नान कर के पूजा करता है और कोई वजू कर के नमाज़ पढ़ता है। इन सब की हिफ़ाज़त हम सभी की

ज़िम्मेदारी है। चाहे वह सियासी गलियारों के साहिबे इकतदार हों या आम हिंदुस्तानी शहरी हों। उनका कौमी फ़रीज़ा है कि हिंदुस्तान की इस समाजी खूबसूरती को तबाह न होने दें। यहां की सदियों पुरानी मुशतरका तहज़ीब को सियासी मफ़ाद की खातिर एक खास नज़रिया को परवान चढ़ाने के लिए कुर्बान न करें। इसलिए कि खाके वतन का हर ज़रा आफ़ताब है।

इज़्जत मआब, दूसरी तज़वीज़ मौजूदा हुक्मत के एकतदार में आते ही अकलियतों और कमज़ोर तबकों के ज़हन में अपने तहफूज़ को ले कर शुकुक व शुबहात पैदा होने लगे थे और यह अंदेशा सताने लगा था कि शर पसंद और फिरका परस्त ताकतें मज़ीद ताकतवर और फआल न हो जाएं, जिसकी वजह से अकलियतों और कमज़ोर तबकों को मादर-ए-वतन की ममता से लबरेज़ पाकीज़ा आंचल में सिर छुपाना मुश्किल न हो जाए। आखिरकार उनका अंदेशा सही साबित हुआ। फिरकापरस्तों के इशियालअंगेज़ बयानात और शरारत आमेज़ हरकत वो सकानात के नतीज़े में एक खौफ़नाक लहर उठी जिसकी वजह से अकलियतें चौतरफा मज़ालिम का शिकार हुईं। कई रियासतों में इंसानियत लहलुहान हो गई। सिर्फ यही नहीं, इससे बढ़ कर हुआ है नफ़रतों का बोलबाला। दिलों से प्यार घटता जा रहा है। सड़क पर लाश अहंसा की पड़ी है। किन्नारे एकता रोती खड़ी है। भरा है ज़हर अब गंगोजमन में। वतन बेआबरू है अब वतन में। लिहाज़ा हुक्मत अपने अमल से अकलियतों के जहनों से इस तरह के शुकुके शुबात को दूर करने के लिए यह अहद करे। आज के बयान में होम मिनिस्टर इसका एलान करें कि अकलियतों के अंदेशा को दूर करने के लिए उनकी आईनी हुक्क की अदायगी में किसी तरह की कोताही नहीं की जाएगी।

इज़्जत मआब, तीसरी तज़वीज़ हमारे मुल्क के मेमारों की दूरअंदेशी थी कि उन्होंने आज़ादी के बाद हिंदुस्तान को एक सैक्युलर स्टेट करार दिया। सैक्युलिज़्म का नज़रिया, अनेकता में एकता, मज़हबी रवादारी और तमाम धर्मों के सम्मान पर आधारित है। यूं भी अनेकता में एकता वाले समाज को एक जमहूरी निज़ाम में, कल्चरों की डायवर्सिटी के तकाज़ों के बीच एक दरम्यानी रास्ते की ज़रूरत होती है और यह रास्ता सैक्युलरिज़्म का है। लेकिन अफ़सोनाक बात यह है कि हमारे सैक्युलर समाज को जिस ज़हनियत से मुसलसल ज़ख्म लगता रहा है, मौजूदा सियासी माहौल में उसे मज़ीद ताकत और तवानाई मिल गई है। ऐसी ज़हनियत के लोग आपे से बाहर हो गए हैं। कोई कह देता है कि नरेंद्र मोदी के मुखालफिन के लिए हिंदुस्तान में कोई जगह नहीं है। कोई धमकी देता है कि काशी, मथुरा और अयोध्या से मुसलमान अपना दावा वापस कर लें, वरना हिंदुस्तान में उनका वजूद खतरे में पड़ जाएगा। कोई कह देता है कि मुसलमान गुज़रात के फ़साद को भूल गए हों, लेकिन मुज़फ़्फरनगर के फ़सादात उन्हें ज़रूर याद होंगे। कोई कहता है कि वज़ीरे आजम नरेंद्र मोदी की लीडरशिप में इस मुल्क को हिंदु राष्ट्र में तब्दील किया जाएगा। कोई कहता है कि मुल्क में रहने वाले तमाम लोगों को हिंदू कहा जाए। हालांकि इलैक्शन के दौरान नरेंद्र मोदी जी ने एक सहाफ़ी के सवाल के जवाब में कहा था कि हिंदू राष्ट्र बनाने का मामला, हमारे मुखालफिन का गलत प्रचार है। जमहूरिया हिंद एक दस्तूर के मुताबिक चलता है और हमारा आईन हर मज़हब और हर जात को बराबर दर्जा देता है। किसी मज़हब को खास दर्जा देना दस्तूरे हिंद के मिज़ाज के खिलाफ है। यह साफ हो जाना चाहिए...(व्यवधान)

माननीय सभापति : माननीय सदस्य श्री कीर्ति आज़ाद।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : केवल कीर्ति आज़ाद जी की बात रिकॉर्ड में जायेगी।

(Interruptions) â€¦*

श्री कीर्ति आज़ाद (दरभंगा) : महोदय, उनका माइक बन्द हो जाये तो मैं बोलूँ...(व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बोलिये।

â€¦(व्यवधान)

श्री कीर्ति आज़ाद : महोदय, जब उनका माइक बन्द होगा तभी तो पता चलेगा कि कौन बोल रहा है?... (व्यवधान)

माननीय सभापति : महोदय, धन्यवाद। खड़गे जी ने यह चर्चा शुरू की थी। उन्होंने इस विषय पर चर्चा शुरू की थी, मैं आशा करता हूँ कि वे यहाँ रुकेंगे। ... (व्यवधान) ओवैसी जी को मैं ढूँढ रहा हूँ, वे मुझे कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं। सबसे बड़ा अगर सैक्युलरिज़्म का सर्टिफिकेट है तो वह उनके पास है।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : आप बैठ जाइये।

â€¦(व्यवधान)

श्री कीर्ति आज़ाद : मुलायम सिंह जी न जाने कहाँ चले गये?... (व्यवधान) वे हमसे बड़े हैं, वे हमारे आदरणीय हैं।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : केवल कीर्ति आज़ाद जी की बात रिकॉर्ड में जायेगी। अन्य किसी की बात रिकॉर्ड में नहीं जायेगी।

(Interruptions) â€¦*

HON. CHAIRPERSON : Nothing would go on record except the speech of Shri Kirti Azad.

(Interruptions) â€¦*

माननीय सभापति : आप अपनी बात शुरू कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : उनका माइक बन्द है, आप अपनी बात शुरू कीजिए। आप चिन्ता मत कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : महोदय, उन्हें एक मिनट का समय दे दीजिए, वे अपनी बात समाप्त कर लेंगे।... (व्यवधान)

माननीय सभापति : हमने उन्हें पाँच की जगह आठ मिनट का समय दे दिया है।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : कीर्ति जी, आप एक मिनट रुकिये। हक जी, आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त कीजिए।

â€¦(व्यवधान)

श्री मोहम्मद असरारुल हक : मैं यह चाहता हूँ कि मुल्क के कानून और आईन की धज्जियाँ उड़ाने के जुर्म में उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए और उन पर लगाम लगायी जाए। फिरका वाराना फ़सादात हिन्दुस्तान की सेक्युलर पेशानी पर कलंक का टीका है। हिन्दुस्तान के मौजूदा कानूनी निजाम में खामियाँ हैं, जिसकी वजह से फ़सादी और फ़सादबर्पा करने वालों को कानून के शिकंजे में आसानी से नहीं लिया जा सकता है।

इसलिए मैं आपके माध्यम से हुकूमत से मुतालिबा करता हूँ कि हुकूमत इसके लिए कोई कानून का मसवदा तैयार करे या फिर यू.पी.ए. सरकार द्वारा तैयार किये हुए बिल को लोक सभा के फ्लोर पर मंजूरी के लिए पेश करें। मैं आपका बहुत-बहुत शुक्रगुजार हूँ। मैं अपनी पार्टी की सदर मोहतरमा सोनिया जी का शुक्रिया अदा करते हुए अपनी बात इस शेर के साथ खत्म करता हूँ- साथियों बढ़ो और उन चिरागों को बुझा दो, जिन चिरागों से नफरत का धुआं उठता है।...(व्यवधान)

श्री कीर्ति आज़ाद : अगर असम और जम्मू कश्मीर में यह तकरीर कर देते तो ज्यादा अच्छा लगता।...(व्यवधान)

माननीय सभापति : नथिंग विल गो ऑन रिकॉर्ड।

(Interruptions) â€¦*

श्री कीर्ति आज़ाद : महोदय, मैं माननीय मुलायम सिंह जी से और माननीय ओवैसी जी से केवल कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ, दोनों यहाँ उपस्थित नहीं हैं और फिर मैं चचा खड़गे जी पर आऊंगा।...(व्यवधान) आदरणीय मुलायम सिंह जी पिता तुल्य हैं। मैं उनकी बहुत इज्जत करता हूँ। उन्होंने कहा कि मैं बड़े दिनों से सांप्रदायिकता झेल रहा हूँ। मैं उनसे पूछना चाहता हूँ कि सरकार में आप हैं, आप झेल रहे हैं या यू.पी. की जनता को झिलवा रहे हैं?...(व्यवधान) आपकी सरकार वहाँ पर है। आपने मुजफ्फरनगर में हुए दंगों की घटना पर चर्चा की। आपने कहा कि किसान और मुसलमान, अगर इन्सान कहा जाता तो मुझे ज्यादा अच्छा लगता। हिन्दुस्तान में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इन्सान है और उसने भारत को आगे बढ़ाने में अपनी भूमिका निभायी है। मैं सिर्फ उनसे जानना चाहता हूँ, उनकी ही सरकार के एक मंत्री थे, जिनका कल मैं टेलीविजन पर एक इंटरव्यू देख रहा था। जिसमें उन्होंने न जाने क्या-क्या इनके बारे में कहा, वह यहां कहना मेरे लिए उचित नहीं होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि इन्होंने उस इंटरव्यू को जरूर देखा होगा। मुजफ्फरनगर के दंगे में एक टेलीविजन चैनल ने एक स्टिंग ऑपरेशन किया। उस स्टिंग ऑपरेशन में वे मुजफ्फरनगर वाले थाना प्रभारी के पास गए थे और उनसे बात कर रहे थे। उन्होंने बताया कि वही मंत्री जो कल इनके बारे में अलग-अलग संस्कृत में पाठ कर रहे थे,...(व्यवधान) उन्होंने ही वहाँ के थाना प्रभारी को यह हिदायत दी थी कि जिन-जिन लोगों का नाम मैं लिखवाऊंगा, उन्हीं लोगों के नाम पर तुम मुजफ्फरनगर के दंगे में एफ.आई.आर. दर्ज करोगे।...(व्यवधान) उसके कारण से न जाने भारतीय जनता पार्टी के कितने लोगों के ऊपर गलत और बेबुनियादी आरोप लगाये गए और आज भी वे केस झेल रहे हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि उन्होंने हिदायतें दी थीं तो क्या वे अपने मंत्री को निकालेंगे या उस थाना प्रभारी को निकालेंगे? अगर ये चाहें तो मैं उस टी.वी. चैनल से कहूँगा कि इनको लाकर के वह पूरा स्टिंग ऑपरेशन दिखा दें, जिसमें उसने इस बात को माना है।...(व्यवधान) जिसमें उसने इस बात को माना है कि सरकार के कहने पर बेगुनाह लोगों के ऊपर हमने यह आरोप लगाये, जिसमें भारतीय जनता पार्टी संगठन के लोग थे।...(व्यवधान)

श्री धर्मन्द्र यादव (बदायूँ) : महोदय, एक मिनट, मैं कुछ कहना चाहता हूँ।...(व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Dharmendrajai, please sit down. Let him speak.

श्री कीर्ति आज़ाद : महोदय, देखिए, मैं बोलता हूँ कि यह कठ की हाँडी बार-बार नहीं चढ़ती है। इस बार यह लोक सभा के चुनाव में इन्होंने देख लिया। ये विधान सभा की बात करके गये हैं, इस बार इन्हें मुसलमान भी वोट देने वाले नहीं हैं। वह तो अंत में खड़गे जी के पास आऊंगा तो बताऊंगा कि क्यों? सहारनपुर के दंगों के बारे में बात की गई। मैं इनसे जानना चाहता हूँ कि हाई कोर्ट ने आदेश दे दिया था, हमारे अल्पसंख्यक सिख भाइयों को गुरुद्वारा बनाने के लिए वह ज़मीन दे दी गई थी, लेकिन उनको वह गुरुद्वारा नहीं बनाने दिया गया। इनकी पुलिस ने हाई कोर्ट के आदेश की तामील नहीं की और उसके कारण वहाँ दंगे हुए जिसमें कांग्रेस के एक अल्पसंख्यक सदस्य का भी नाम है जिन्होंने वह दंगा कराया था। मैं जानना चाहता हूँ अगर मैं गलत हूँ। अगर मैं गलत हूँ तो ये मुझे अवश्य बताएँ, मैं अपनी बातों को वापस लूँगा। आज जिस प्रकार से ...* ने बात की कि ये लोग परेशान होते हैं, मैं तो समझता हूँ कि ...* बोलते हैं तो पूरा देश परेशान हो जाता है, जो परिस्थिति बनती है और जिस प्रकार से इन्होंने कहा कि दंगा फैलाने वाले इधर हैं, मैं आपसे अनुरोध करूँगा कि जो भी कुछ कार्रवाई में आया हो, उसको निकालें। क्योंकि इस प्रकार के भड़काऊ भाषण देकर ये लोग देश में और समाज में समरसता नहीं लाकर लोगों को लड़ाने की कोशिश करते हैं।

माननीय ...* हमारे बड़े अच्छे मित्र हैं, उनको मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। एक बार उनके पिताजी यहाँ 13वीं लोक सभा में थे, तब मुझे उनका साथ करने का मौका मिला। एक बार उनके साथ पाकिस्तान भी गया था और बड़ी अच्छी तकरीर इन्होंने वहाँ की थी। उनके पास सबसे बड़ा सैक्यूलरिज्म का सर्टिफिकेट है। इन्होंने नौ-दस प्रश्न पूछे थे। मैं भी नौ-दस प्रश्न पूछ रहा हूँ। पहला यह कि क्या दो साल पहले हैदराबाद में उनकी पार्टी के किसी सदस्य ने भड़काऊ भाषण दिया था या नहीं? ...(व्यवधान) दूसरा, क्या वह व्यक्ति उस समय वहाँ की विधान सभा में विधायक था या नहीं? तीन, क्या संयोग से वह सदस्य इनका ही बड़ा भाई था? चार, क्या उस भड़काऊ भाषण में उसने हिन्दू देवी-देवताओं के बारे में अश्लील शब्दों का उपयोग किया था या नहीं किया था? पाँच, क्या यह सच नहीं है कि उनके भाई ने कहा था कि यह पुलिस दस मिनट पीछे खड़ी हो जाए तो हम हिन्दुस्तान वालों को दिखा देते हैं कि हम यहाँ हिन्दुस्तान में क्या कर सकते हैं। छः, जब उसके ऊपर कार्रवाई के लिए वहाँ की पुलिस गई तो क्या इनके भाई, जिन्होंने यह भड़काऊ भाषण दिया था, वे लंदन नहीं भाग गए थे? सात, यदि इनको, ओवैसी जी को इसकी जानकारी थी और सैक्यूलरिज्म का सर्टिफिकेट लेकर ये घूमते हैं तो मैं इनसे जानना चाहता हूँ कि इन्होंने उनके ऊपर क्या कार्रवाई की, यह हमें यहाँ पर बताएँ।...(व्यवधान)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : Sir, I am on a point of order. ...(Interruptions) I am quoting the same rule as was quoted by the hon. Member from the other side.

HON. CHAIRPERSON : If it is so, then I will delete it. I assure you, it will be deleted.

...(Interruptions)

SHRI MALLIKARJUN KHARGE : I am raising this because he is speaking against a Member who is not present in the House. Let him give notice and then we will listen to him...(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: I accept it and I will delete that.

â€¦(व्यवधान)

SHRI S.S. AHLUWALIA (DARJEELING): Sir, I have a submission...(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: Shri Ahluwalia ji, we just have 10 minutes more to conclude this discussion. We have to take up the Private Members' Business.

...(Interruptions)

SHRI S.S. AHLUWALIA : Sir, if the hon. Member is not present in the House, then it is not his fault...(Interruptions) It cannot be deleted. It should form part of the proceedings...(Interruptions)

HON. CHAIRPERSON: The name of the person will be deleted.

...(Interruptions)

SHRI KIRTI AZAD : Sir, we listened to him and so I too want to ask him certain questions because he carries the certificate of secularism and so it is my right to know...(Interruptions) माननीय सदस्य चले गए हैं। मैं तो उनको बताना चाहता था कि हमारे देश में सौहार्द है। सऊदी अरब जैसा देश नहीं है कि जिस समय रमज़ान चल रहे थे और वहाँ पर कोई हिन्दुस्तानी पैप्सी पी रहा था तो उसको मार दिया गया, वह भी मज़दूर था। हिन्दुस्तान में ऐसा नहीं होता है। भड़काने वाले लोग ये होते हैं, बद से बदनाम वाली बात भारतीय जनता पार्टी की है, और कोई दूसरी नहीं है। अब खड़गे जी से पूछता हूँ। खड़गे जी ने दंगों की चर्चा तो की है। ... (व्यवधान) इराक में भाई को भाई मार रहा है, आप कुछ नहीं कहते। आई.एस.आई.एस. इराक में भाई भाई को मार रहा है, एथनिक क्लीनिंग हो रही है तो कोई कुछ नहीं कहता। यहाँ बैठकर हमें सैक्युलरिज़्म बताते हैं।

â€¦(व्यवधान)

माननीय सभापति : केवल कीर्ति आज़ाद जी का भाषण ही रिकार्ड में जाएगा, अन्य किसी का नहीं जाएगा।

â€¦(व्यवधान)

श्री कीर्ति आज़ाद : महोदय, मैं माननीय खड़गे जी से जानना चाहता हूँ कि आदरणीय खड़गे जी आपने इस विषय पर चर्चा शुरू की थी और केन्द्र की सरकार पर आरोप पर आरोप लगा दिए। खेद की बात यह है कि आपने केवल अंधेरे में तीर चलाए, आपने एक भी पुख्ता प्रमाण नहीं दिया कि भारत सरकार ने किसी भी प्रकार के सांप्रदायिक दंगे करवाए हैं। मैं आपको यही कहना चाहता हूँ कि जब आप अंधेरे में तीर चलाते हैं, तो कई बार खुद को भी लग जाता है। आप जो यह सैक्युलरिज़्म का सर्टिफिकेट लेकर चल रहे हैं, उस मुखौटे के पीछे असली चेहरा क्या है, भारत की जनता ने वर्ष 2014 के लोक सभा चुनाव में आपको बता दिया है। आज कांग्रेस में परिस्थिति यह हो रही है कि एक केम्पेन चला था- सेव टाइगर। अब कांग्रेस वाले आपस में बैठ कर कह रहे हैं कि सेव टाइगर केम्पेन छोड़ो, सेव कांग्रेस केम्पेन शुरू करो, केवल 44 सदस्य ही बचे हैं। आज यह परिस्थिति इनके साथ है।

महोदय, मैं इनसे केवल इतना कहना चाहता हूँ कि इन सब चीजों को बेवजह, बेमतलब बढ़ाने का प्रयास न करें पुख्ता सबूत हो तो सामने लेकर आएँ। महबूता जी ने अपने भाषण में एसपी का भी नाम लिया था और कहा था कि पुलिस वालों को भी वहाँ की सरकारें कई बार सीखा कर यह काम करवाती हैं। इसके बारे में मैं आपको पहले बता चुका हूँ। इसलिए मैं खड़गे जी से आपके माध्यम से कहना चाहूँगा कि ऐसी बेबुनियाद, जिनमें कोई तथ्य न हो, इस प्रकार के विषय ल लाएँ और सदन का समय बर्बाद न करें।

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Mr. Chairman Sir, on the eve of Independence Day, I rise to speak on the sensitive subject of communal violence and the ways of tackling that menace.

Tomorrow morning, the hon. Prime Minister will be at the Red Fort delivering his first speech from its ramparts. In the winter of 1945, Mahatma Gandhi had gone to the Red Fort to meet the prisoners of the Indian National Army being held there by the British. These freedom fighters had felt no distinction of creed or religion when they fought under Netaji Chandra Bose's leadership with *Chalo Dilli* on their lips. They had dreamt of holding their victory parade in the Red Fort. They dined together before they shed their blood together in the battle of our freedom. "But here, we are faced with Hindu tea and Muslim tea". These freedom fighters complained to Mahatma Gandhi. "Why do you suffer it?" Gandhi Ji asked. "We don't." They replied. "We mix Hindu tea and Muslim tea half and half and then serve. The same with food." "That is very good." Mahatma exclaimed laughing. We need to rekindle that spirit of cultural intimacy and political solidarity among religious communities, if we are to be free of the scourge that goes by the name of communal violence.

Our celebrations of Independence had been marred by terrible partition violence and we had resolved then "Never again." And yet, 1984 in Delhi, 1992-93 in Ayodhya and Mumbai, 2002 in Gujarat have been years of shame for us. In this year of grace, 2014, there have been incidents of

violence that are cause for grave concern.

I do not wish to enter into the war of statistics about exactly how many incidents there have been or the blame game as to whether they have taken place in BJP-ruled States or Congress-ruled States. Simply, such episodes must be nipped in the bud. West Bengal is a Heaven of peace in this country in terms of Hindu-Muslim relations. What are the roots of communal violence in our country? Jawahar Lal Nehru had concluded the chapter in his autobiography titled "Communalism rampant" by claiming that surely religion and the spirit of religion have much to answer for.

That, I believe, was a misdiagnosis of the ailment. I share Shri Kharge's concern about the incidents of violence in our country. But we have to be careful not to make religion the enemy of the nation. I wish to assure the Member of the Akali Dal who spoke a little while ago that we are not against religion. We are only against religious prejudice, religious bigotry, religious majoritarianism. We know full well that most people in our country are deeply religious. We respect religious faith. But I would like to say to this Government that when beautiful religious symbols are deployed in the interests of majoritarian triumphalism, then we face a very major problem in our country. That is what, I fear, is happening today. The victory of the ruling party in the general elections has emboldened the more extreme among its followers. Even more than the actual incidents of violence that have taken place, I have grim forebodings of underlying tensions and the sense of fear and the insecurity among the minorities as they feel the cold winds of political exclusion.

To the Government of the day I would like to say, through you, Mr. Chairman, do not remain silent about the episodes of bullying and violence. Restrain and discipline your errant followers with unambiguous words of condemnation and swift action on the ground to uphold the law. ...(*Interruptions*) It is undeniable that a disproportionate number of incidents are taking place in poll-bound constituencies and poll-bound States. Let us not tarnish our democracy by polarizing communities for short-term political gain at the cost of long-term well-being of our country.

The opening speaker from the treasury benches in his fiery speech wearing the saffron robe invoked the name of Swami Vivekananda. Well, let us recall Vivekananda's immortal lines. He said: "I shall go to the mosque of the Muslim; I shall enter the Christians' church and kneel before the crucifix; I shall enter the Buddhist temple where I shall take refuge in the Buddha and his law; and I shall go into the forest and sit down in meditation with the Hindu who is trying to see the light which enlightens the heart of every one." I fervently hope we in Parliament can generate more light than heat. ...(*Interruptions*) I will take no more than one minute. I have been anguished by the tenor of this debate and I want to apply a healing touch before Independence Day.

At the anniversary of the midnight hour of our freedom, let us pledge to devote ourselves to maintaining peace with harmony, with honour among all religious communities – "honour to prudence, honour to sobriety, honour to sanity" to quote Shri Saratchandra Bose.

We sing Rabindranath Tagore's first verse of Jana Gana Mana as our National Anthem. But the time has come to remind ourselves of the song's beautiful second verse, a symphony to unity, a call to weave together a garland of love.

*Ahoraho tabo awohano procharito,
suni tabo udaro bani,
Hindu, Boudho, Sikho, Jaino, Parsiko, Musalmano Christani,
Purabo Paschimo ase tabo singhasono pase
premo-har o hoi gatha, Jana Gano Oikyo Bidhayaka Joyo hey,
Bharata Bhagya Vidhata,
Joyo hey, Joyo hey, Joyo hey, joyo, joyo, joyo, joyo hey.*

SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): After hearing the healing speech of our learned friend, I would like to associate with him. This House is discussing a very important and serious issue, but it is very sensitive also.

वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री, संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा जल संसाधन, नदी विकास और गंगा जीर्णोद्धार मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री संतोष कुमार गंगवार): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूँ कि हम माननीय खड़गे जी को धन्यवाद देंगे, उन्होंने हमारी रिक्वेस्ट को माना है। अभी एक 193 कम्प्लीट हो रहा है और दूसरा 193 शेष है, मैं चाहूँगा कि माननीय मंत्री जी का भी वक्तव्य हो जाए। मैंने सुबह चेयर को निवेदन किया था कि जो गैर सरकारी सदस्यों का कार्य है, उसे आगे के लिए स्थगित कर दिया जाए।

HON. CHAIRPERSON: Does the House agree?

SEVERAL HON. MEMBERS: Agreed.

HON. CHAIRPERSON: Okay, thank you.

SHRI N.K. PREMACHANDRAN : The august House is discussing a very important issue but it is also a sensitive issue. From yesterday onwards, we are all witnessing the debate which has taken place in this House and the way the issue is being addressed by various sections of this House. I would also like to make my apprehension in respect of this issue. From where should tolerance come? To my mind, tolerance has to come first from the Members of Parliament of this august House because we are lawmakers and the policymakers of this country. We should hold the flag of harmony not hatred. It is well known that none of the religious institutions or thoughts of India is professing or propagating the philosophy of hatred but harmony. We know that Jesus Christ has told us that we have to love our neighbours as that of you. And the last Prophet Mohammad has

taught us that if anybody is felling hungry and you are having food at supper, definitely you are not the follower of Islam. Similarly, the basic Hindu philosophy - *Vasudeva Kutumbaham* - which means the whole world is one family. We are all brothers and sisters and that is the salutation Swami Vivekananda has made in Chicago at the World Conference, which has given life to the Indian culture and Indian spirit and tolerance.

But unfortunately what is happening to our country now a days? If you go through the philosophy of Sri Narayana Guru's, the famous thinker, who said that whatever things you do for the betterment of yourself, it should be for the betterment of the whole society. If this is the thinking, teaching and propagation of these eminent thinkers, philosophers or the religious schools of thought, then, what is the real cause of these communal riots and communal divide? The main reason behind this is communalization of Indian politics. Even centuries back, it was there in the history of India. Due to paucity of time, I am not going into any of the quotations.

Mahatma Gandhi in 1921 has warned us about the dangers of communalism. It was cautioned to us roughly 90 years back. Now a days these incidents are happening. I am not going into the political situation which is prevailing in UP, and many other places where communal riots, communal divide and communal violence are going on. It means that we have already communalized the Indian political situation and legitimizing the communalization in politics means that it is a very dangerous situation which the country is going to face.

What is the survival of Indian democracy? The root cause of survival of Indian democracy for the last 60 or 65 years is mainly because we are able to maintain the secular fabric of our country. That is the main cardinal stone in which the Indian democracy is being built up. If we are shaking the cardinal basic stone of our country's federal structure or the secular Constitution, definitely, the survival of country itself would be in peril. So, Sir, my point is this. What is happening in our country? After assuming power by the NDA Government at the Centre, there is an apprehension of safety in the minds of the minority, especially in the minds of Muslims. That is there. Why it is there? Even the manifesto of the BJP, if you go through it, the three controversial issues – construction of Ram *Janma Bhoomi* Temple, repeal of Article 370 and Uniform Civil Code - were there. I do accept the fact that you have got the mandate to govern the country but the main question is that the aspirations and the concerns in the minds of the minority people have to be taken into consideration when we deal with the subject. That is why, the secular Constitution is threatened and that apprehension would definitely cause communal divide and that would lead to communal riots.

Who is suffering in the communal riots? We can examine almost all the communal riots in India since Independence or even prior to Independence, the poor, downtrodden and common people are being killed in the communal riots.

Big business people are not being killed; only common, poor people are being killed in communal riots. So, it is the bounden duty of the Government to remove the apprehension in the minds of the minorities regarding their safety and security. When we talk about development and GDP growth, nothing is going to happen if we are having a communal divide in the country. We can have a prosperous India only if we have communal harmony and unity in the country.

श्री भगवंत मान (संगरूर): सभापति महोदय, बहुत ही संवेदनशील विषय पर बहस चल रही है। मैं किसी भी पार्टी का नाम नहीं लूंगा। देश में जब सांप्रदायिक हिंसा होती है। दंगे और राजनीति बिल्कुल मिक्स हो गए हैं। लोगों का विश्वास राजनीतिक लोगों से उठ गया है और लोगों का विश्वास पुलिस पर से भी उठ गया है। लोग दंगे नहीं चाहते हैं। आज दर्शक गैलरी में बहुत सारे छात्र आए हुए हैं, जो देश के भविष्य हैं। इनसे पूछिए कि ये क्या चाहते हैं? ये चाहते हैं कि हमें पढ़ाई मिले। लोग चाहते हैं कि महंगाई और बेरोजगारी कम हो जाए। लोग चाहते हैं कि उन्हें करप्शन रहित कंट्री चाहिए। लेकिन, इन मुद्दों से हटाने के लिए कई जगह पर सांप्रदायिक हिंसा करवा दी जाती है ताकि बेसिक मुद्दे पीछे छूट जाएं। ऐसे में नुकसान किसका होता है। दंगों में आम आदमी मरते हैं।...(व्यवधान) इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं।...(व्यवधान) पहले तो मैं सत्ता पक्ष को कहता हूँ कि इनके पास बोलने के लिए साढ़े चार घंटे हैं लेकिन ये पांच-पांच घंटे तक बोलते रहते हैं। हमें बोलने के लिए दो-चार मिनट मिलते हैं।...(व्यवधान) कभी सुन भी लिया करें।...(व्यवधान) अगर यह एक दिन माफी न मांगे तो इनका दिन पूरा नहीं होता है।...(व्यवधान) सबसे ज्यादा वह बोलते हैं।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि दंगों में आम आदमी मरते हैं।...(व्यवधान) इस सरकार के पास बहुत बड़ा मेंडेट आ गया है, बहुमत आ गया है। हम जनता के फैसले का सत्कार करते हैं। गवर्नमेंट को चाहिए कि ऐसे प्रबंध किए जाएं कि देश तरक्की की ओर जाए। हमारे युवा पढ़ें। यहां से ब्रेन ड्रेन हो रहा है। उनको लगता है कि उनकी पढ़ाई के मुताबिक उन्हें जॉब्स नहीं मिलती हैं। वे दूसरे देशों में जा रहे हैं। हमारे देश का दिमाग हमारे ही देश के काम आए, ऐसी चीजों को रोकने के लिए बहुत ही जोरदार प्रबंध किए जाने चाहिए। आखिर मैं, मैं एक शेर बोलकर अपनी जगह लेता हूँ।

"कौम को कबीलों में मत बांटिए, लंबे सफर को मीलों में मत बांटिए।

एक बहता दरिया है मेरा भारत, इसको नदियों और झीलों में मत बांटिए। "

श्री अरविंद सावंत (मुम्बई दक्षिण) : सभापति महोदय, धन्यवाद। मैं इस बहस में तो बोलने वाला नहीं था, लेकिन जब मैंने कुछ भाषण सुने, तो मुझे कुछ बुरा और कुछ अच्छा भी लगा। इस देश का जो बंटवारा हुआ, वह बंटवारा ही जिस नींव पर खड़ा हुआ, उसको आज हम भूल गए हैं। मुलायम सिंह जी उस वक्त कहने लगे कि देश को अगर किसी ने बचाया है तो मुसलमानों और किसानों ने देश को बचाया है। आप यह नहीं सोचते हैं कि इस विचार से लोगों के मन में क्या पैदा होगा? जब एप्रोहेन्सन की, माइनोंरिटीज की बात करते हैं, जब माइनोंरिटीज के लिए इस तरह से आप बात करते हैं तो मेजॉरिटी को क्या फील होता है, क्या उसके लिए आपने सोचा है? इस देश में मेजॉरिटी की बात आप इग्नोर करते गए। जात-पात, प्रांत, धर्म और रीजन के ऊपर हम हर वक्त बंटवारा करते रहे हैं।

सभापति महोदय, आज मुझे वंदनीय हिन्दू हृदय सम्राट, शिव सेना प्रमुख बाला साहेब ठाकरे जी की याद आ रही है। स्टॉन्च पैट्रीओट देशभक्त, वह हर वक्त यही कहते रहे कि हमें हिन्दू-मुसलमान से भी आगे जाना चाहिए। हिन्दूस्तान में एक ही शख्स हुआ है जिन्होंने मंडल आयोग का विरोध किया। उन्होंने क्यों विरोध किया? हम जाति में

बंटवारा करने लगे। आज वह हर प्रांत में बढ़ रहा है, आंदोलन हो रहे हैं, संघर्ष हो रहे हैं। वर्ष 1992, मुम्बई में क्यों दंगा हुआ? मुम्बई के लोगों ने आपका क्या बिगाड़ था? ये लोग कौन हैं? ये किस प्रांत के हैं? ये किस धर्म के हैं? कौन से मजहब के हैं। इराक में कौन लड़ाई कर रहा है। क्या हिन्दू कर रहे हैं? कौन किसको मार रहा है? इन सारी चीजों को देखकर बुरा लगता है। एक अच्छी सरकार आई है, अच्छे दिन की बात कर रही है, अच्छा काम करने की सोच रही है। अगर कहीं एक-आध हादसा हो गया तो उसे लेकर ऐसा रंग देने की कोशिश करते हैं जैसे माइनोंरिटी पूरी डर गई है। मेरे क्षेत्र में माइनोंरिटी के बहुत से लोग हैं। वे बहुत अच्छी तरह रहते हैं। मैं कभी-कभी कहता हूँ - वो हिन्दू रहेगा न मुसलमान रहेगा, इंसान की औलाद है इंसान रहेगा। वह इंसान हिन्दुस्तान का रहना चाहिए। अगर वह इंसान है तो उसे हिन्दुस्तान की जमीं से प्यार करना चाहिए। हमें हमीद पर गर्व है। जब तक श्री अजहरुदीन झमेले में नहीं आए, हमें उन पर भी गर्व था। जब लगता था कि देश के लिए खेल रहे हैं तो अच्छा लगता था। हमने कभी नहीं कहा कि वे मुसलमान हैं। लेकिन अगर मुसलमान इस राष्ट्र के प्रवाह में खुद को शरीक करें, गंगा और यमुना का संगम हो तो आगे चलकर गंगा का पानी कौन सा है और यमुना का पानी कौन सा है, क्या पता लगता है। मुसलमानों को इसे सोचना चाहिए कि वे गंगा के पानी में ऐसे घुल जाएं कि आगे चलकर पता न चले कि यह पानी गंगा का है या यमुना का है, इतना ही पता लगे कि यह पानी हिन्दुस्तान का है, हिन्दुस्तान का है। जब ऐसी बात होती है तो मुझे बहुत दुख होता है। मैं बोलना नहीं चाहता था।

15.41 hrs

(Hon. Speaker in the Chair)

इन्होंने गांधी जी, सुभाष चन्द्र जी, विवेकानन्द जी की बात की। I do remember, once Mahatma Gandhi had said, 'Spiritualise the politics'. Are we spiritualising it? Who has ruled this country for 60 years? Could they spiritualise the politics? On the contrary, they have divided the politics on regions and religions. ... (Interruptions)

माननीय अध्यक्ष : अरविंद जी, क्या आपकी बात हो गई?

â€¦(व्यवधान)

श्री अरविंद सावंत : मैं दो मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा।... (व्यवधान) मैं बोलना नहीं चाहता था। मुझे बहुत बुरा लगा इसीलिए मैं बोलने के लिए खड़ा हुआ।... (व्यवधान) मुझे इस बात का बुरा लगा कि हमारे बुजुर्ग लोग इस सदन में कहते हैं कि अगर इस देश को आगे बढ़ाया है तो मुसलमानों और किसानों ने बढ़ाया है। यह कोई बात हुई। क्या यह मजहब इकट्ठा करने की बात हुई, मजहब को एक साथ लाने की बात हुई? यह तो बंटवारे की बात हुई। मैं चाहता हूँ कि ऐसे बंटवारे की बात इस सदन में आगे न हो। अगर बात करनी है तो प्यार की बात करें, रिश्ते की बात करें। रिश्ता ऐसा बनाएं कि आगे चलकर हम खुद सोचें। हम हर चीज को पोलिटिसाइज करते हैं, हर चीज को चुनाव के नजरिए से देखते हैं कि इससे मुझे चुनाव में क्या लाभ होगा, मेरी पार्टी को क्या लाभ होगा।... (व्यवधान) आप यही काम करते आए हैं, इसलिए 44 पर चले गए। मुझे लगता है नरेन्द्र मोदी जी इस देश को जिस ढंग से आगे बढ़ाना चाहते हैं, हम सब मिलकर उनके हाथ और मजबूत करें, तभी देश आगे बढ़ेगा।

श्री संतोष कुमार गंगवार : अध्यक्ष महोदया, नियम 193 के अंतर्गत चर्चा पूरी हो गई है। माननीय खड़गे जी ने इस बात को स्वीकार भी कर लिया है। राजनाथ जी की तबीयत खराब है, वे नहीं आ सकते। इसलिए इस चर्चा का रिप्लाइ अगले सत्र में होने की संभावना रहेगी। दूसरे 193 के अंतर्गत चर्चा का रिप्लाइ माननीय मंत्री महोदया अभी देंगी।... (व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : अध्यक्ष महोदया, ... (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष : अगर आप चाहें तो स्टेट मिनिस्टर रिप्लाइ दे सकते हैं।

â€¦(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : चाहने का प्रश्न नहीं है। राजनाथ जी की तबीयत ठीक नहीं है। We wish him all the best; speedy recovery. He should come and reply; we wish. In his absence, if the Prime Minister comes and replies, we will hear him. Otherwise, there is no point in that. That is why, I agreed for that.

माननीय अध्यक्ष : कुछ माननीय सदस्य महिलाओं और बच्चों पर बढ़ते अत्याचार के विषय पर अपनी लिखित स्पीच देना चाहते थे। अगर वे ऐसा चाहते हैं तो अपनी स्पीच टेबल पर ले कर सकते हैं।